राष्ट्रभाषा मित्र

2993

1618

संपादक

श्री. पी. जे. जोसफ

(हिन्दी लेक्चरर, मार ईवान्योस कालेज, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. पी. परमेश्वरन पिल्लै B. Sc. (Eng.)

(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टि B. A; साहित्यरत्न

(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

मोहन प्रकाशन

MOHAN PUBLICATIONS.

राष्ट्र भाषा साहित्य समिति

स्टादयू रोड त्रिवेन्द्रम-१

Standard VIII Book No. 3

2993

शत्रु तथा मित्र

1618

संपादक

श्री. पी. जे. जोसफ़

(हिन्दी लेक्चरर, मार ईवान्योस कालेज, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. पी. परमेश्वरन पिल्लै B. Sc. (Eng.)

(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टि B. A; साहित्यरत्न

(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

★

प्रकाशक

श्री. के. प्रभाकरन नायर

कावुविला हाउस,

जगति, तिरुवनन्तपुरम ।

दाम ५० नये पैसे

SATRU TATHA MITRA

FIRST IMPRESSION, COPIES 1500

1957

PUBLISHER

SRI. K. PRABHAKARAN NAIR
KAVUVILA HOUSE
JAGATHY, TRIVANDRUM.

All rights reserved]

[*Price 50 nP.*

संपादकीय

हमारे छात्र-जगत् में उपयोगी हिन्दी पुस्तकों के नितांत अभाव ने विद्यार्थियों की बौद्धिक प्रगति को अवरुद्ध किया है। उस अभाव की सर्वांगीण पूर्ति का विनम्र प्रयास है, यह पुस्तकमाला। इसमें रचना की लोकप्रियता तथा अक्लिष्टता केलिए प्रचलित संस्कृत शब्दों का प्रयोग एवं केरल के छात्रमण्डल की प्रवृद्ध बौद्धिकता के अनुरूप वस्तु-व्यंजना—ये दोनों कार्य अध्यापनकला में अपने विपुल अनुभव के आधार पर हमारे निष्कर्ष हैं।

प्रबंध, नाटक, जीवनी, गल्प आदि विभिन्न रूपों के द्वारा विज्ञान, धर्म्म, कला, संस्कृति—सभी क्षेत्रों का संस्पर्श करके विद्यार्थियों में महत्वाकांक्षा जाग्रत कर, एक सांस्कृतिक चेतना फैलाने का प्रयास आप इन पन्नों पर देख सकेंगे। बौद्धिक विकासक्रम में छात्रों के विभिन्न स्तरों को ध्यान में रखकर उसी के अनुरूप सभी पुस्तकों की रचना की गयी है। यहाँ तक कि कठिन शब्दों की अर्थ-सूची तथा मुहावरों का प्रयोग भी क्रम क्रम से प्रस्तुत हैं। स्तर पर स्तर ये मृदुल श्रम-सीकर सागर-से चिर सुंदर बन जाएँ।

* * * *

शीघ्रता के कारण यत्र-तत्र जो त्रुटियाँ हुई हैं उन्हें सहृदय पाठक गण क्षमा करें।

इस किताब के बारे में

हमारे बीच में ऐसी बहुत-सी कहानियाँ हैं जो अविश्वसनीय होने पर भी बालकों के चरित्र - निर्माण में योग देती हैं । पंच - तंत्र इसी प्रकार के कथा-रत्नों का भंडार है । इस किताब द्वारा यह व्यक्त करने का प्रयास किया गया है कि होशियार दुश्मन बेवकूफ दोस्त से भी अच्छा है ।

पी. जे. जोसफ़

शत्रु तथा मित्र

१. तीन दोस्त

छोटे मित्रो, कहानी सुनोगे ? बहुत अच्छी कहानी है। पुरानी कहानी है। 4000 वर्ष पुरानी है। पहले पहल[1] एक ब्राह्मण पंडित ने यह कहानी सुनायी थी। उनका नाम विष्णुशर्मन था। उन्होंने राजकुमारों को यह कहानी सुनायी थी। उन्होंने और कई कहानियाँ भी सुनायी थीं। सभी कहानियाँ एक बडी पुस्तक में हैं। उस पुस्तक का नाम "पंचतंत्र" है। उस में से एक कहानी अब सुनाऊँगा। इसका नाम है "शत्रु तथा मित्र" या "होशियार दुश्मन[2] बेवकूफ दोस्त[3] से अच्छा"।

एक राजकुमार था। उसके दो मित्र थे। एक तो एक बडे पण्डित का पुत्र था। दूसरा एक बडे व्यापारी का पुत्र था। तीनों में आपस की[4] बडी दोस्ती थी। वे हमेशा एक साथ रहते थे। एक साथ खेलते थे और एक

---

1. पहले पहल = सर्वप्रथम
2. होशियार दुश्मन = बुद्धिमान शत्रु
3. बेवकूफ दोस्त = बुद्धिहीन मित्र
4. आपस की = परस्पर

साथ खाते थे। तीनों लडके मिलकर टहलने जाते थे। खेल-तमाशे देखने जाते थे।

खेल-तमाशे राजकुमारों का काम नहीं है। उनको हाथी घोडे की सवारी सीखनी चाहिए। हथियार चलाना[1] सीखना चाहिए। शिकार खेलना चाहिए। ये ही राजकुमारों के लायक खेल हैं। लेकिन यह राजकुमार कुछ नहीं करता था। वह हमेशा मित्रों के साथ गपशप करता था[2]।

महाराज को राजकुमार की चाल-ढाल अच्छी न लगी[3]। उन्होंने सोचा — "कुमार राजोचित कार्यों में विमुख है। यह तो बुरी बात है। उसको आइन्दा[4] राज्य करना पडेगा। उसके लिए अभी से तैयार होना चाहिए।" ऐसा सोचकर महराज ने कुमार को अपने पास बुलाया और कहा — "पुत्र, तुम राजकुमार हो। मेरे बाद तुम्हीं को सिंहासन पर बैठना है। लेकिन तुमको इसकी चिन्ता नहीं। तुम हाथी घोडे की सवारी नहीं सीखते। शिकार खेलने नहीं जाते। हमेशा इधर उधर भडकते

---

1. हथियार चलाना = आयुध का प्रयोग करना
2. गपशप करना = अनावश्यक रूप में बातें करना
3. अच्छी न लगी = पसन्द न आयी
4. आइन्दा = भविष्य में

फिरते[1] हो । साधारण लडकों के साथ गपशप करते रहते हो । यह तो शरम की बात[2] है । क्या तुम्हें शरम नहीं आती ? राजकुमार को अपनी मर्यादा का ख्याल रखना[3] चाहिए । मैं तुम पर बहुत असन्तुष्ट हूँ । आगे अपने कर्त्तव्य का ख्याल रखना । नहीं तो मैं तुम्हें राज्य से निकाल दूँगा ।"

महराज बहुत कुपित हो गये थे । उनकी आँखें लाल हो गयी थीं । राजकुमार यह देखकर डर गया । पिता के सामने वह हाथ बाँधकर खडा था । उसके पैर काँपते थे । वह कुछ भी नहीं बोला । पिता की बातें सुनकर उसको बडा दुख हुआ । वह सिर झुकाकर चला गया ।

प्रश्न

1. "पञ्चतन्त्र" क्या है ?
2. राजकुमार के मित्र कौन कौन थे ?
3. महराज कुमार से क्यों कुपित हुआ ?

---

1. भडकना फिरना = घूमना
2. शरम की बात = लज्जापूर्ण कार्य
3. मर्यादा का ख्याल रखना = मर्यादा का पालन करना

२. आपस की सलाह[1]

राजमहल के बाहर कुमार के दोनों दोस्त खडे थे। कुमार उनके पास आया। उन्होंने कुमार से पूछा— "कुमार, महराज ने आप को क्यों बुलाया? आपका चेहरा क्यों उतर गया[2] है? आँखें क्यों भर आयीं? क्या बात हुई?"

कुमार बोला— "यार, कुछ मत पूछो। मैं अपनी जान लेकर तुम्हारे पास आया हूँ। बस यही भाग्य की बात है। पिताजी आग बबूला हो[3] गये थे। मैं ने सोचा, मुझे मार डालेंगे। पर ऐसा न हुआ। मुझे इसी का दुख है। मार डालते तो कितना अच्छा होता! पर उन्होंने मुझे बहुत बुरा-भला सुनाकर[4] छोड दिया। इतना बडा अपमान! अब क्यों जीवित रहूँ, यही मेरा ख्याल है।"

व्यापारी के पुत्र ने कहा— "नहीं नहीं, ऐसा मत कहिये कुमार। मान जाय, पर प्राण न जायँ। प्राण रहें तो मान पा सकेंगे।"

---

1. आपस की सलाह = परस्पर परामर्श
2. चेहरा उतर गया = मुख पर दुख व्याप्त हुआ
3. आग बबूला होना = अत्यन्त कुपित होना
4. बुरा-भला सुनाना = डाँटना

पंडित का पुत्र बोला—"महराज आप से क्यों कुपित हुए? आप ने यह नहीं बताया।"

कुमार बोला— "उन्होंने कहा कि मैं राज-काज से दिलचस्पी नहीं लेता[1]। हमेशा मित्रों के साथ गपशप करता हूँ। ऐसा करता हूँ, वैसा करता हूँ। इस कारण वे मुझे राज्य से निकाल देंगे।"

व्यापारी के बेटे को यह सुनकर अचरज हुआ। महराज अपने कुमार से ऐसा कह सकेंगे? मेरे पिता मुझे बहुत डाँटते-डपटते[2] हैं। कहते हैं कि मैं आवारा हो गया हूँ। पर यह तो बात अलग है। हम कौन होते हैं? एक साधारण व्यापारी और उसका बेटा। लेकिन ये तो राजकुमार हैं। ये भी एक दिन राजा बनेंगे। इनसे ऐसी बातें! इस प्रकार सोचकर उसने कहा— "कुमार यह तो बहुत बुरा हुआ। मेरे पिताजी मुझे भी डाँटते हैं। पर आप तो राजकुमार हैं। अब हम दोनों में क्या फरक है?"

पंडित के पुत्र ने कहा — "कुमार, महराज ने आप की भलाई के लिए ऐसा कहा। इस पर अधिक दुखी होने

---

1. दिलचस्पी लेना = रुचि प्रकट करना
2. डाँटना-डपटना = बुरा-भला कहना

की जरूरत नहीं । मेरे पिताजी मुझे भी अवसर बुरा-भला कहते हैं। क्यों कि मैं तो आजकल अपने ग्रन्थों को सलाम दे चुका[1] हूँ। आप के साथ रहना ग्रन्थ पढने से कितना अच्छा है ! इसलिए पिताजी की जली-कटी[2] चुपचाप सह लेता हूँ।"

राजकुमार को मित्रों की बातें सुनकर सान्त्वना मिली। पर पिताजी की बातें उसके मन में खटकती थीं । उसने कहा — "मेरे प्यारे मित्रो, अपमानित होकर यहाँ रहना कठिन है । तुम दोनों मेरे समान अपमानित हुए । उसका भी कारण मैं हूँ। इसलिए हम तीनों मिलकर यहाँ से दूर कहीं चले जायँ। फिर हमें कोई नहीं डाँटेगा। हम आज़ाद हो जायँगे। देश विदेश में भ्रमण करेंगे। भ्रमण करने से हमारा ज्ञान बढ़ जायगा। हमारी बुद्धि विकसित होगी। हमारा साहस बढ़ जायगा।"

पंडित का पुत्र और व्यापारी का पुत्र सहमत हो[3] गये। तीनों ने देश छोडने का निश्चय किया। पहले किधर जायँ, यही उनकी चिंता थी। व्यापारी का पुत्र दुनिया की

---

1. सलाम दे चुका = तिरस्कार किया
2. जली-कटी = व्यंगपूर्ण बातें
3. सहमत होना = सम्मति देना

चाल-ढाल[1] कुछ कुछ जानता था। उसने कहा— "हम ने देश छोडने का निश्चय किया। पर हमारे पास धन नहीं है। धन के बिना हम क्या कर सकेंगे? बिना पैसे की ज़िन्दगी टें टें[2]। धोबी के कुत्ते बनकर घूमेंगे। न घर के होंगे न घाट के[3]।"

राजकुमार बडी कठिनाई में पडा। पर वह अपने निश्चय से ज़रा भी न टला। उसने व्यापारी के पुत्र से कहा— "तुम धनपति के पुत्र हो। तुम्हीं कहो, हम कहाँ से धन प्राप्त करें।" यह सुनकर व्यापारी के पुत्र ने कहा— "हम पहले पहाड पर चढेंगे। पहाड पर रत्न होते हैं। हम रत्न की तलाश करेंगे[4]। शायद हमारा भाग्य खुलेगा। हमें कुछ रत्न मिलें। तब तो काम आसान होगा।"

पंडित के पुत्र ने कहा— "पहाड पर चढने से और एक फायदा है। वहाँ का दृश्य कितना सुन्दर है! देखकर मन पुलकित होगा। कुमार सारा दुख भूल जायँगे।"

---

1. चाल-ढाल = रीति
2. टें टें = अर्थशून्य
3. धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का = वह व्यक्ति जो घरवालों और अन्य लोगों के लिए भी उपयोगहीन है।
4. तलाश करना = अन्वेषण करना

बात तै हुई[1] । तीनों मिलकर चल पडे ।

प्रश्न

1. कुमार ने क्यों देश छोडना चाहा ?
2. भ्रमण करने से क्या फायदा होता है ?
3. पंडित अपने पुत्र से क्यों कुपित हुआ था ?
4. व्यापारी ने अपने पुत्र को क्यों बुरा-भला कहा ?
5. पहाड पर चलने से क्या फायदा है ?

कुमार गृहत्याग
पोतडी हौंस
पोबारि संगत्याग
मुलक काढ

1. तै होना = निश्चय करना

३. रत्न की तलाश

राजकुमार अपने दोनों मित्रों के साथ पहाड की ओर चला। पहले वे समतल से होकर चले। उसके आगे जंगल था। तीनों मित्रों ने जंगल में प्रवेश किया। वह तो बडा डरावना जंगल था। वहाँ ऊँचे-ऊँचे पेड थे। उन पर मोटी-मोटी लतायें लिपटकर बढी थीं। नीचे घनी झाडी थी। दिन में भी वहाँ प्रकाश कम था। इस जंगल के बीच में से पगडंडी पडी थी। एक के पीछे एक कर जाना पडता था। सब के सामने पंडित का पुत्र चलता था। उसके पीछे राजकुमार और फिर व्यापारी का पुत्र चले।

पंडित का पुत्र प्रकृति की गंभीरता देखकर मुग्ध हो जाता था। ऊँचे-ऊँचे पेडों, मोटी-मोटी लताओं तथा तरह-तरह के जीवजाल को देखकर उसके मन में एक प्रकार का उदात्त भाव उत्पन्न होता था। राजकुमार को डाकुओं का भय लगा। ऐसे निर्जन स्थानों में डाकू छिपे रहते हैं और मुसाफिरों पर हमला करते[1] हैं। अगर कोई आवे तो हम क्या करें? हमारे पास तो कोई हथियार नहीं है।

---

1. हमला करना = आक्रमण करना

मैं ने हथियार चलाना नहीं सीखा, बहुत बुरा किया। ईश्वर ही हमारी रक्षा करे। ऐसी चिन्ताओं में डूबकर राजकुमार पण्डित के पुत्र के पीछे-पीछे चला। पर व्यापारी के पुत्र की मनोगति दूसरी थी। वह रत्नों का सपना देखकर चला जाता था। इस प्रकार कुछ दूर चलने पर वे जंगल के बाहर आये। सामने पहाड़ था। चढाई शुरू हुई।

पहाड पर इधर उधर झाडियाँ थीं। कहीं कहीं चट्टानें थीं। बीच-बीच में साफ ज़मीन भी थी। तीनों मित्र पौधों के बीच में, चट्टानों के तले और साफ ज़मीन पर अच्छी तरह देख देखकर ऊपर चढे। कुछ दूर चढने पर उन्होंने एक बडी चट्टान देखी। उस में एक गुफा था। मित्रों ने उस में प्रवेश किया। उन्होंने वहाँ भी अच्छी तरह तलाश की। उनका यत्न विफल नहीं हुआ। उन को वहाँ से तीन बडे बडे चमकनेवाले रत्न मिले। हर एक ने एक एक रत्न लिया। फिर वे गुफे के बाहर आये। वहाँ बैठकर वे आराम करने[1] लगे। थोडी देर बाद राजकुमार बोले— "मित्रो, रत्न तो मिले। पर एक बडी कठिनाई है। हमें उस जंगल में से होकर लौटना है। अगर डाकू आवें

---

1. आराम करना = विश्राम लेना

तो हम क्या करेंगे? रत्न के लिए वे हमें मार डालेंगे। बडा खतरा है।"

व्यापारी का पुत्र रत्न बेचने का उपाय सोच रहा था। इसलिए उसने कुमार की बातों पर ध्यान नहीं दिया[1]। पर पण्डित के पुत्र ने कहा— "मैं ने इसके बारे में पहले ही सोचा है। मुझे एक अच्छा उपाय भी सूझा है। हम तीनों एक एक रत्न निगलेंगे। हमारे पेट में वे सुरक्षित रहेंगे। जंगल पार करके[2] हम उन्हें फिर से उगल लेंगे।"

राजकुमार और व्यापारी का पुत्र दोनों को यह उपाय बहुत अच्छा लगा। उन्होंने अपने मित्र की बुद्धिमानी की तारीफ की[3]। राजकुमार ने अपने मन में कहा— "एक न एक दिन मैं राजा बनूँगा। तब इसी को अपना मंत्री बनाऊँगा।"

तीनों ने एक एक रत्न रोटी के टुकडे में रखकर निगल लिया। राजकुमार ने कहा— "काम हो गया[4]।

---

1. ध्यान देना = गौर करना
2. पार करना = तरण करना
3. तारीफ करना = प्रशंसा करना
4. काम हो गया = कार्य चला

अब तो रत्न सुरक्षित हैं। हम बहुत जल्दी जंगल पार करेंगे और रत्न उगल लेंगे।" तीनों मित्र पहाड से उतरने लगे।

राजकुमार का विचार गलत था। उनके पेट में भी रत्न सुरक्षित नहीं थे। क्यों कि उस समय गुफे के पीछे एक आदमी बैठा था। वह डाकू था। राजकुमार और उसके मित्रों ने उसे नहीं देखा। लेकिन उसने इन तीनों को देखा। वह भी रत्न की तलाश करने आया था। पर उसे कोई रत्न नहीं मिला था। उसने इन तीनों के हाथ में रत्न देखे। उनकी सलाह सुनी। उनका काम देखा। उसने सोचा— "तीन दिन से मैं पहाड की खाक छान[1] रहा हूँ। चढता उतरता हूँ। घूमता फिरता हूँ। पर मुझे एक भी रत्न नहीं मिला। पर इनको देखो। ये निरे लडके हैं। यहाँ आते ही उनको तीन रत्न मिले। मैं इनको नहीं छोडूँगा। इनके साथ चलूँगा। रात को ये सो जायँगे। तब इनको मार डालूँगा और इनका पेट चीरकर तीनों रत्न लूँगा।" ऐसा सोचकर वह भी उनके पीछे पहाड से उतरने लगा।

---

1. खाक छानना = अच्छी तरह अन्वेषण करना

वह बहुत जल्दी उन तीनों के पास पहुँचा और नमस्ते किया। उसे देखकर मित्रों को आश्चर्य हुआ। यह कहाँ से आया? कौन है? क्यों हमारे पास आया है? इसका चेहरा देखकर अच्छा नहीं लगता। इस प्रकार की बातें उनके मन में आने जाने लगीं। उनको चुप देखकर डाकू बोला— "मुझे यहाँ अचानक देखकर अचरज होता है क्या? मैं मुसाफिर हूँ। पहाड की शोभा देखने चढ गया था। पहाड पर बैठे बैठे देर हो गयी। अकेले जंगल पार करने से डरता हूँ। क्या मैं भी आप लोगों के साथ चलूँ?"

उस आदमी की बातें सुनकर राजकुमार ने सोचा— "अच्छा हुआ कि यह भी हमारे साथ आ गया। चार लोगों का दल तीनों के दल से बढकर बलवान होगा।" ऐसा सोचकर उसने कहा— "आओ भाई, हम तुम्हारा स्वागत करते हैं। अब हमारा दल और मज़बूत हो गया। हम निडर होकर जंगल पार करेंगे।"

चारों मिलकर आगे बढे। वे तुरन्त जंगल में आ गये।

प्रश्न

1. जंगल कैसा था?
2. तीन रत्न कहाँ से मिले?

3. मित्रों ने रत्नों को कहाँ छिपा रखा[1] ?
4. डाकू उनके साथ क्यों आया ?
5. राजकुमार ने डाकू का स्वागत क्यों किया ?

---

४. निराली चिडिया

जंगल में भीलों की एक बस्ती थी । भील जंगली जाति है । उस बस्ती में कई भील रहते थे । वे छोटी छोटी झोंपडियों में रहते थे । वे तोता, मैना आदि चिडियों को पालते थे । भीलों का सरदार कई चिडियों को पालता था । वह चिडियों की बोली समझता था ।

चिडियों की अपनी बोली है । डर लगने पर वे एक प्रकार से बोलती हैं । खुशी की बोली दूसरी है । हम भी वह बोली कुछ कुछ समझ सकते हैं । मुर्गी की बोली तो हम खूब समझते हैं । चील-कौए आते हैं, तब मुर्गी एक प्रकार की

---

1. छिपा रखना = दूसरों की आंख बचाकर रखना

आवाज़ निकालती है। वह अपने बच्चों से कहती है— "बच्चो, दुश्मन आते हैं, छिप जाओ।" तुरन्त मुर्गी के बच्चे छिप जाते हैं। दुश्मन दूर हो गये, मुर्गी दूसरे प्रकार से बोलती है। तब बच्चे उसके पास दौड आते हैं। दाना, कीडे वगैरह देखकर वह और एक प्रकार से बोलती है। उसका मतलब है— "बच्चो दौड आओ, अच्छा खुराक मिला।" ये सब बोलियाँ हम भी समझ सकते हैं। क्योंकि मुर्गी से हम अच्छी तरह परिचित हो गये हैं। जंगली चिडियों की बोली तो हम समझ नहीं सकते। क्यों? हम उन से अधिक परिचित नहीं। कोशिश करेंगे तो वह भी हम समझ सकेंगे। इस के लिए चिडियों का निरीक्षण खूब करना चाहिए।

भीलों का सरदार चिडियों का खूब निरीक्षण करता था। वह उनसे खूब परिचित हो गया था। इस प्रकार उसने चिडियों की बोली खूब सीख ली थी। उसके पास बोलनेवाली कई चिडियाँ थीं। वे तरह तरह की आवाज़ें निकालती थीं। सरदार सब कुछ समझ लेता था।

भीलों की बस्ती के पास एक पगडंडी थी। राजकुमार अपने मित्रों के साथ उस पगडंडी से होकर आ रहा था। सरदार की एक चिडिया ने उनको दूर से देखा। वह एक

बूढी चिडिया थी। सरदार उसको बहुत चाहता था। क्यों कि वह बडी जानकार थी। उसको एक प्रकार की दिव्य दृष्टि मिली थी। घडे में कोई चीज़ बन्दकर रखो। वह चिडिया घडा देखते ही कहेगी कि उसके अन्दर अमुक चीज़ है। उसे कभी गलती न होती थी। सरदार यह जानता था।

चारों मित्र आ रहे थे। बूढी चिडिया उनको देख कर चहचहाने लगी। सरदार अपनी झोंपडी में बैठा था। चिडिया की आवाज़ सुनते ही वह बाहर आया। गौर से वह सुनने लगा। चिडिया बराबर चहचहाती रही।

सरदार ने तुरन्त अपने कुछ मित्रों को बुलाया। उसने कहा— "जानते हो यह चिडिया क्या बोल रही है? वह बोलती है 'रत्नों के साथ लोग आ रहे हैं, आ रहे हैं।' यह चिडिया कभी झूठ नहीं बोलती। मैं ने कई बार इसकी परीक्षा ली है। देखो, चार लोग आ रहे हैं। जरूर उनके पास रत्न हैं। नहीं तो यह चिडिया इस प्रकार न गाती। तुरन्त जाओ। उनको पकडकर मेरे सामने हाज़िर करो[1]।"

---

1. हाज़िर करना = प्रस्तुत होना

तुरन्त चार-पाँच भील दौड गये। उन्होंने चारों मित्रों को रोक लिया और कहा— "सरदार का हुकुम है, बस्ती में आओ।"

पंडित का पुत्र बोला— "हम यात्री हैं। पहाड की शोभा देखने गये थे। हम शाम के पहले जंगल पार करना चाहते हैं।"

एक भील बोला— "सरदार का हुकुम कोई टाल नहीं सकता। चले आओ। नहीं तो हम लोग चारों को बाँध कर ले जायँगे।"

राजकुमार ने कहा— "अच्छा, हम चलते हैं। पर हमें जल्दी जाने देना।"

भील ने कहा— "देखा जायगा।"

लाचार होकर चारों को भीलों के पीछे पीछे जाना पडा। तीनों मित्रों ने सोचा— "पर्वाह नहीं। रत्न तो सुरक्षित हैं। हमारे पास और कुछ नहीं। भील हमें लेकर क्या करेंगे?"

डाकू ने सोचा— "बुरा हुआ। मैं ने इनको लूटना चाहा। अब स्वयं आपत्ति में पडा। बबूल का बीज बोया। बबूल का फल ही मिलेगा।"

प्रश्न

1. चिडियों की बोली कैसे समझ सकते हैं ?
2. बूढी चिडिया की क्या विशेषता थी ?
3. डाकू ने क्या सोचा ?



५. तलाशी

चारों मित्र भीलों की बस्ती में पहुँचे। वहाँ उन्होंने कई झोंपडियाँ देखीं। वे कतार में[1] बनी थीं। उनके बीच में से सडक थी। वही झोंपडियों का आँगन था। बस्ती में अनजान लोगों को देखकर कुत्ते भूँकने लगे। कालेकलूटे लडके उन के चारों तरफ दौडने लगे। झोंपडियों के पीछे से काली कुरूप भीलनियाँ झाँकती थीं। हट्टे-कट्टे[2] जवान इधर उधर खडे होकर मूँछों पर ताव देते[3] थे। ये सब

1. कतार में = पंक्ति में (line)
2. हट्टे कट्ठे = हृष्ट-पुष्ट
3. ताव देना = हाथ फेरना

देखते-सुनते चारों मित्र एक बडी झोंपडि के सामने पहुँचे। उस झोंपडी के चारों तरफ कई पिंजडे लटक रहे थे। उन में तरह तरह की चिडियाँ थीं।

झोंपडे के चबूतरे पर फूस की चटाई बिछी थी। उस पर एक भील बैठा था। वह मोटा ताज़ा[1] था। तोंदवाला था। उसकी बडी बडी मूँछें मुँह को ढँककर चिबुक के दोनों ओर से नीचे लटक रही थीं। सिर के बाल बिखरे पडे थे। उसके कानों में पीतल की बडी बडी बालियाँ लटक रही थीं। गले में मोतियों की माला थी। उसने लाल रंग का कछोटा बाँधा था। उसके और कोई कपडा नहीं था। यही भीलों का सरदार था।

चारों मित्र सरदार के सामने खडे हो गये। उसका चेहरा और लाल लाल आँखें देखकर उनको डर लगा। सरदार कडी आवाज़ में बोला— "मेरी चिडिया कहती है, तुम्हारे पास रत्न हैं। सभी रत्न लेकर मेरे सामने रखो और अपनी राह पकडो[2]।"

---

1. मोटा ताज़ा = हृष्ट-पुष्ट
2. राह पकडना = चले जाना

E.R.RAMASUDHAN
ERATHARAYIAL
HOUSE
UALLA RIDHAM
P.O. UA. A.M.

तीनों मित्र एक दूसरे का मुँह देखने लगे। चौथा सिर झुकाकर खडा था। सरदार ने फिर से गरजकर कहा— "सुनते नहीं ? क्यों बगलें झाँकते[1] हो ? मेरा हुकुम मानो। नहीं तो खाल उधेड लूँगा।" यह सुनकर किसी को बोलने का साहस न हुआ। आखिर डाकू ने कहा— "एक चिडिया की बात पर क्या भरोसा है ? हमारे पास रत्न नहीं है। हम पहाड की शोभा देखने गये थे। अगर आप को विश्वास नहीं है तो हमारी तलाशी लीजिये[2]।"

सरदार ने तुरन्त तलाशी लेने का हुकुम दिया। एक एक भील एक एक की तलाशी लेने लगा। उन्होंने उनको सिर से पैर तक अच्छी तरह देख डाला। बालों में, कपडे में, कानों के अन्दर, जूतों में, सब जगह तलाश की। पर रत्न नहीं मिला। फिर सरदार ने खुद उनकी तलाशी ली। आखिर उसे उनकी बातों पर विश्वास आया। उसने उनको छोड दिया। वे खुशी खुशी चले गये।

उनके जाते ही वह बूढी चिडिया चहकने लगी— "रत्नों के साथ लोग जा रहे हैं, जा रहे हैं।" सरदार ने

---

1. बगलें झाँकना = रक्षा मार्ग ढूँढना
2. तलाशी लेना = शोध करना

यह सुनकर भीलों को फिर से हुकुम दिया— "उनको पकड लाओ।"

चारों मित्र फिर से सरदार के सामने खडे हो गये। फिर से सरदार ने उनकी तलाशी ली। फिर से वह निराश हुआ। रत्नों का कुछ भी पता न लगा। इसलिए उसने उनको जाने दिया। लेकिन उनके जाते ही चिडिया बोलने लगी— "रत्नों के साथ लोग जा रहे हैं, जा रहे हैं।"

सरदार ने सोचा— "यह चिडिया अभी तक झठ नहीं बोली है। वह बार बार कहती है कि उनके पास रत्न हैं। पर उन्होंने रत्नों को कहाँ छिपा रखा है?" थोडी देर सोचने के बाद उसने तीसरी बार हुकुम दिया— "जाओ, उनको फिर से मेरे पास लाओ।"

चारों मित्र फिर से लौट आये। अब शाम हो चुकी थी। आते ही व्यापारी के पुत्र ने पूच्छा— "हमें बार बार क्यों बुलाते हो सरदार? तुम लोगों ने खूब तलाशी ली। रत्न नहीं मिला। हम ने पहले ही कहा कि हमारे पास रत्न नहीं है।"

सरदार कडककर बोला— "चुप रह बदमाश। तुम्हारे पास रत्न है ही। मेरी चिडिया कभी झठ नहीं बोलती।

वह बार बार कहती है कि तुम्हारे पास रत्न हैं । मुझे मालूम है, रत्न कहाँ हैं । तुम्हारे पेट में रत्न होंगे । यह मैं देखना चाहता हूँ । अब रात हो गयी । कल सबेरे मैं तुम लोगों के पेट चीरकर रत्न लूँगा ।"

ऐसा कहकर सरदार ने चारों को एक काल कोठरी में बन्द कर लिया ।

प्रश्न

1. भीलों की बस्ती में मित्रों ने क्या देखा ?
2. सरदार देखने में कैसा था ?
3. सरदार ने क्यों उनके पेट चीरने का निश्चय किया ?

६. विवेक की सूझ

चारों मित्र कालकोठरी में पड गये। क्या से क्या[1] हो गया। तीन लोग दुनिया देखने चले थे। चौथा लूट-मार करने चला था। अब चारों मिलकर काल कोठरी में पडे। इसी को कहते हैं, भाग्य का खेल। आगे क्या होगा, कौन जाने?

चारों ने शाम को कुछ नहीं खाया था। फिर भी उनको भूख नहीं लगती थी। कैसे लगती? कल सबेरे पेट का चीर-फाड[2] होगा। फिर आज भूख कैसे लगे? वे पडे पडे सोचते रहे। राजकुमार की आँखों में आँसू भर आये। उसने सोचा— "हाय, पिताजी की बात न मान कर मैं चला आया। अब उसका फल भोग रहा हूँ। मेरे कारण और तीन लोग भी आपत्ति में पडे।" उसके दोनों मित्र भी इसी प्रकार सोच रहे थे। पर डाकू की बात अलग थी।

डाकू ने पहले काल कोठरी की जाँच की। क्या निकल भागने[3] का कोई उपाय तो नहीं? पर वह निराश

---

1. क्या से क्या = प्रतीक्षा के विरुद्ध
2. चीर-फाड = शस्त्रक्रिया
3. निकल भागना = रक्षा लेना

हुआ। ऊपर छत में एक छोटा छेद था। और कोई रास्ता नहीं था। दीवारें, किवाड सब मज़बूत थे। एक छोटे छेद में से तो आदमी निकल जा नहीं सकता। उसने देखा, उसके तीनों मित्र दीवार से पीठ लगाये बैठे हैं। अन्धेरे में वह उनके चेहरे न देख सकता था। अभागे कहीं के[1]! पेट में रत्न डालकर बैठे हैं! इनके कारण मैं भी आपत्ति में पडा। उसे अगले सवेरे की बात याद आयी। उसने सोचा— "मैं ने इनका पेट चीरकर रत्न लेना चाहा। पर दूसरा कोई वह काम करेगा। वह यों ही[2] मेरा पेट भी चीर डालेगा। मैं कहूँगा, मेरे पेट में रत्न नहीं है। पर ये भील विश्वस करें तब न? वे उनके पेट में रत्न देखकर मेरा भी पेट चीर डालेंगे। मैं यों ही मर जाऊँगा। वे तीनों अपनी संपत्ति की रक्षा करने में प्राण छोडेंगे। मैं तो पागल कुत्ते की मौत मरूँगा। मैं क्या करूँ?"

वह थोडी देर इधर उधर टहलता रहा। फिर सोचने लगा— "सब को एक न एक दिन मरना है। अमीर-गरीब, बुरे-भले, छोटे-बडे सब एक न एक दिन मृत्यु के मुँह में पडेंगे।

---

1. अभागे = भाग्यहीन
2. यों ही = वृथा

इसलिए अब मरूँ या कुछ दिन बाद मरूँ, दोनों बराबर है। पर पागल कुत्ते की मौत मरना अच्छा नहीं। मैं ने जीवन में अभी तक कुछ भलाई नहीं की है। अब मरने के पहले एक भलाई कर क्यों न मरूँ? मैं ने सुना है दूसरों की भलाई के लिए मरना खुशी की बात है। इस प्रकार मरने का अवसर हमेशा हाथ नहीं आता[1]। अब मुझे ऐसा अवसर मिला है। मैं मरने के पहले इन तीनों जवानों के प्राण बचा दूँगा। ये तीनों उम्र में मुझ से छोटे हैं। इनको अब मरना नहीं चाहिए। इनके पेट में रत्न हैं। ये उनको लेकर बेचें और सुखी जीवन बितावें। इन के लिए मैं अपने प्राण दे दूँगा। इस भलाई के लिए शायद अगले जन्म में मैं सुखी रह सकूँगा।"

इस प्रकार सोचते सोचते उसने रात बिताई। सूरज निकला। छत के छेद में से थोडी रोशनी अन्दर आ रही थी। उस धूमिल प्रकाश में डाकू ने अपने तीनों मित्रों को देखा। वे बेचारे सो रहे थे। यह देखकर उसने कहा— "निरे बच्चे हैं। देखो, बेफिक्र[2] सो रहे हैं। थोडी देर में सरदार आयगा, उनके पेट चीर डालने। वह अभी अपना

---

1. हाथ आना = मिलना
2. बेफिक्र होकर = निश्चिन्त होकर

चाकू तेज़ कर[1] रहा होगा। पर ये तो सुख की नींद सो रहे हैं। इन बच्चों के लिए प्राण छोडना भी खुशी की बात है।" उनके पास खडे होकर उसने कहा— "सोओ बच्चो, छोटे भाइये, सोओ। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। अपने प्राण देकर मैं तुम्हें बचाऊँगा। जिओ, सुखी रहो।"

इतने में एक भील ने आकर कालकोठरी का दर्वाज़ा खोला। उसकी आवाज़ सुनकर तीनों जवान जाग पडे। सरदार बाहर खडा था। उसके हाथ में बडा चाकू था। उसकी धार प्रभात के प्रकाश में चमक रही थी। वह देखते ही तीनों जवान काँपने लगे। तुरन्त डाकू सरदार के सामने आकर खडा हो गया। उसने हाथ जोडकर[2] बडी नम्रता के साथ कहा— "सरदार मेरी बिनती सुनिये। ये तीनों मेरे छोटे भाई हैं। मेरे सामने इनके पेट मत चीर डालिए। यह मैं देख नहीं सकूँगा। आप पहले मेरा पेट चीर डालिए। अगर मेरे पेड में रत्न है तो उनके भी पेट चीर डालिए। अगर नहीं है तो चिडिया की बात झूठ है। आप मेरे भाइयों को छोड दें।"

---

1. तेज़ करना = तीक्ष्ण बनाना
2. हाथ जोडकर = अंजली बांधकर

सरदार उसकी नम्रता देखकर खुश हुआ। उसने उसकी बात मान ली[1]। उसने उसका पेट चीर डाला। उसके प्राण निकल गये[2]। पर सरदार को कोई रत्न नहीं मिला। उसने झट उस बूढी चिडिया को पकड लिया और उसका गला घोंट डाला[3]। फिर तीनों जवानों को जाने दिया। वे अपने अपने प्राण लेकर वहाँ से भागे।

देखो भाइयो और बहनो, डाकू उनको मारने आया था। वह उनका दुश्मन था। पर वह जानकार था, विवेकी था। इसलिए उससे उनकी हानि नहीं हुई। हानि के बदले उनकी बडी भलाई हुई। आगे बेवकूफ दोस्त का काम देखेंगे।

प्रश्न

१. कालकोठरी में कौन कौन पडे थे।
२. कालकोठरी कैसी थी?
३. राजकुमार ने क्या सोचा?
४. डाकू ने अन्त में क्या निश्चय किया?

---

1. बात मान लेना = सहमत होना
2. प्राण निकल गये = मर गया
3. गला घोंट डाला = कण्ठ दबाकर मार डाला

७. सिंहासन पर

राजकुमार पंडित का पुत्र और व्यापारी का पुत्र भीलों की बस्ती से चले गये। थोडी दूर आगे चलकर वे जंगल के पार हो[1] गये। अब उन्होंने ईश्वर को धन्यवाद दिया[2]। क्यों कि वे अंतिम निमिष मृत्यु के मुँह से बच गये थे। यह तो आश्चर्य की बात थी। ईश्वर की कृपा के बिना यह असंभव था।

तीनों मित्र एक तालाब के पास ठहरे। वहाँ बरगद का एक बडा पेड था। उसकी छाया में बैठकर वे रत्न बाहर लेने की कोशिश करने लगे। उन्हें ने गले में ऊँगली ठालकर कै करने[3] की कोशिश की थोडी देर कोशिश करने पर रत्न बाहर आये। राजकुमार ने व्यापारी के पुत्र से कहा – "अब तुम्हीं जाकर इनको बेच आओ।"

व्यापारी का पुत्र तीनों रत्न लेकर निकल पडा। कुछ दूर चलकर वह एक नगर में पहुँचा। वह गलियों में घूमने-फिरने लगा। एक गली में उसने एक पारखी की दूकान

---

1. पार होना = दूसरी ओर जाना
2. धन्यवाद देना = कृतज्ञता देना
3. कै करना = वमन करना

देखी। पारखी के पास जाकर व्यापारी के पुत्र ने कहा – "मेरे पास तीन रत्न हैं। पहाड पर से खोजकर लाया हूँ। खरीदोगे?"

पारखी ने रत्नों की परख की। वे तीनों बढिया रत्न थे। पारखी बोला – "मैं इनको खरी दूँगा। क्या दाम लोगे[1]?"

व्यापारी के पुत्र ने कहा – "तुम्हीं बताओ। अगर उचित दाम मिले तो मैं इनको तुम्हारे हाथ बेचूँगा।"

पारखी उन तीन रत्नों के पन्द्रह हज़ार अशर्फियाँ देने को तैयार था। व्यापारी का पुत्र सहमत हुआ। पारखी ने पन्द्रह हज़ार अशर्फियाँ तीन थैलों में बन्द कर दीं। वे बहुत भारी थे। व्यापारी के पुत्र ने एक बैलगाडी किराये पर ली[2]। उस में तीनों थैले लाद लिये[3] और तालाब की ओर चल पडा। रास्ते में उसने रोटी, फल वगैरह भी खरीद लिया। वह तुरन्त अपने मित्रों के पास पहुँचा

---

1. क्या दाम तोगे? = क्या मूल्य दोगे?
2. किराये पर लेना = भाडे पर लेना
3. लाद लेना = भार चढाना

और तीनों थैले उतार कर बरगद के पेड के नीचे रखा और गाडी वान को किराया देकर उसे वापस भेज दिया।

इतना अधिक धन पाकर तीनों मित्र फूले न समाये[1]। उन्हों ने तालाब में स्नान किया और फिर नाश्ता किया[2]। उसके बाद राजकुमार ने कहा - "मित्रो, हम धन कमाने निकले थे। हमें काफी धन मिल गया। अब क्या करना चाहिए।"

पंडित का बेटा बोला - "कुमार, हम इस देश को अपने अधीन कर लेंगे। आप यहाँ के राजा बनें।"

राजकुमार को यह बात बहुत अच्छी लगी। पर इस देश को कैसे अधीन कर लेंगे ? यही विकट प्रश्न था। व्यापारी के पुत्र ने कहा - "हमारे पास काफी धन है। हम सिपाहियों को दुगुना वेतन देकर अपने वश में कर लेंगे। फिर हाथी, घोडे, रथ, हथियार सब खरीदेंगे। उसके बाद राजमहल पर अचानक हमला करेंगे और राजा को मार डालेंगे।"

---

1. फूले न समाना = बहुत सन्तुष्ट होना
2. नाश्ता करना = लघु भक्षण करना

पंडित का पुत्र बोला—"शाबाश दोस्त! यही ठीक है। सिपाहियों को फोड लेने[1] का काम मुझ पर छोडो। हम अभी काम शुरू करेंगे।" इतना कहकर उसने एक थैली में कुछ अशर्फियाँ लीं और शहर चला गया। दो तीन घंटे बाद वह पाँच आदमियों को लेकर लौट आया। वे पाँचों आदमी राजा की सेना के सरदार थे। हर एक सरदार के अधीन हज़ार हज़ार आज्ञाकारी सिपाही थे। सब मिलकर योजना बनाने[2] लगे।

एक सरदार ने कहा—"यहाँ का राजा बडा बेवकूफ है। पर उसका मंत्री बडा होशियार है। बडा चालाक है। वह युद्ध में और राज-काज में निपुण है। लेकिन वह बडा स्वार्थी है। हमें अच्छा वेतन नहीं देता। प्रजा को कई प्रकार से तंग करता है। उन पर बहुत ज़्यादा कर लगाता है। सब लोग उस से असन्तुष्ट हैं। हम लडाकू हैं। लडना हमारा काम है। उसके लिए हमें वेतन मिले। बस यही हम चाहते हैं। अगर आप लोग हमें अच्छा वेतन देंगे तो आप लोगों के लिए हम लडेंगे। हम राजा और

---

1. फोड लेना = वश में करना
2. योजना बनाना = परिपाटी बनाना

मन्त्री दोनों को कैदकर लेंगे[1] और इस कुमार को गद्दी पर बिठाएँगे[2] ।"

कुमार ने कहा— "सरदारो! हम आप लोगों को खूब तनख्वाह देंगे । आप लोगों को किसी भी बात की कमी न रहेगी । हमारे पास काफी धन हैं । आशा है आप लोग ईमानदारी से काम करेंगे ।"

बात तै हुई । व्यापारी का पुत्र हाथी-घोडे खरीदने सरदारों को लेकर चला गया । राजकुमार पंडित के पुत्र के साथ राज-काज की चर्चा करने लगा ।

शाम तक[3] सुसज्जित सेना तैयार हो गयी । उन्होंने समय नष्ट करना नहीं चाहा । देरी खतरनाक थी । मंत्री को खबर लगती तो वह सारा बना बनाया काम[4] बिगाड देता । इसलिए उसी रात को राजमहल पर आक्रमण किया । मन्त्री को कुछ भी खबर न लगी थी । इसलिए वह कुछ भी तैयारी न कर सका । फिर भी उसने इन गिने[5] सिपाहियों

---

1. कैद कर लेना = बन्दी बनाना
2. गद्दी पर बिठाना = राजा बनाना
3. शाम तक = सन्ध्या के अन्दर
4. बना बनाया काम = फायदा
5. इने गिने = कुछ

के साथ शत्रु का सामना किया। लेकिन कुछ फ़ायदा न हुआ। युद्ध में राजा और मंत्री दोनों काम आये[1]। दूसरे दिन सवेरे पाँच हज़ार सिपाहियों के जयघोष के बीच में राजकुमार सिंहासन पर बैठा।

महाराज ने पंडित के पुत्र को अपना मंत्री बनाया। व्यापारी का पुत्र खजानची बना। अन्य अफसरों की भी नियुक्ति हुई। सब लोगों ने नये महराज का स्वागत किया। भूतपूर्व मंत्री ने प्रजा पर कई प्रकार के कर लगाये थे। नये मन्त्री ने सब कुछ रद्द कर दिया[2]। सब लोग सन्तुष्ट हो गये। महाराज ने सारा राज-काज अपने मंत्री पर छोड दिया और सुखी जीवन बिताने लगा।

प्रश्न

1. रत्नों के क्या दाम मिला ?
2. कुमार ने कैसे सेना इकट्ठी की[3] ?
3. लड़ाई का क्या नतीजा हुआ ?
4. नये मंत्री ने क्या सुधार किया ?

---

1. काम आना = युद्ध में मरना
2. रद्द कर देना = to cancel
3. इकट्ठा करना = एकत्रित करना

८. बेवकूफ़-दोस्त

महाराज बड़ा सुखलोलुप था। उसके अन्तःपुर में सुन्दरी स्त्रियाँ थीं। महराज उनके साथ गपशप करता हुआ दिन बिताने लगा। राजमहल में कई पालतू जानवर[1] और चिड़ियाँ थीं। महराज उनको भी बहुत चाहता था। वह अकसर उनके पास जाता था और अपने हाथों उनको खिलाता था। यह तो राजा-महराजाओं का एक व्यसन[2] है। पालतू पशु-पक्षियों पर वे अधिक धन व्यय करते हैं। तोता, मैना, कबूतर, तीतर, बकरा, बन्दर आदियों को वे बड़े प्यार से पालते हैं।

राजमहल में एक बन्दर था। वह आदमियों से बहुत हिल-मिल गया था। वह लोगों की बातें समझ सकता था। वह कुछ कुछ बोल भी सकता था। राजमहल के नौकर-चाकर उससे कई प्रकार के काम कराते थे। फल तोड़ना, लकड़ी लाना, गाय चराना आदि काम वह बन्दर अच्छी तरह कर सकता था। वह गोशाला की छत पर सोता था।

एक दिन महराज अपनी गोशाला देखने गया। वहाँ कई सुन्दर सुन्दर गायें बँधी थीं। महराज उनको देख देख-

---

1. पालतू जानवर = घरेलू जानवर 2. व्यसन = बुरा स्वभाव

कर आगे बढा। इतने में एक बन्दर उसके सामने कूद पडा[1]। उसने महराज को सलाम दिया और उसके सामने प्रणाम किया। राजा को यह देखकर बड़ा कुतूहल हुआ। उसने बन्दर को अपने पास बुलाया। वह आकर महराज के पास खड़ा हो गया।

एक सेवक बोला - "अन्नदाता, वह बन्दर बड़ा आज्ञाकारी है।" महराज ने कहा – "अच्छा देखूँ।" फिर उसने बन्दर से कहा - "अरे बन्दरराज, वह फूल तोड़ ला।" उसने बन्दर को एक फूल दिखाया। तुरन्त बन्दर फूल तोड़ लाया। महराज बहुत खुश हुआ। वह बन्दर को अपने साथ ले गया।

उस दिन से बन्दर का भाग्य खुला। वह महराज के साथ बैठकर खाना खाता था। महराज के कमरे के बगलवाले कमरे में पलंग पर सोता था। कुछ ही दिनों में वह मोटा ताज़ा हो गया! सब लोग उसका सम्मान करता था। वह महराज का सब से बड़ा दोस्त बन गया। महराज ने उसको अपना तलवारवाहक बना दिया। वह कन्धे पर तलवार रखकर महराज के आगे आगे चलने लगा।

---

2. कूद पडना = झपटना

राजमहल के पास एक फुलवारी थी। वहाँ तरह तरह के पेड़-पौधे थे। वसन्त में उसकी शोभा देखते ही बनती थी[1]। रंग-रंग के[2] फूल खिल जाते। उनकी सुगंधि से सारा राजमहल महक उठता[3]। कोयल, तोता वगैरह चिडियाँ उसमें आ जातीं। उनके गाने से अंतरिक्ष मुखरित हो जाता। भौंरे फूलों पर मंड़राते हुए गूँजते। महराज अक्सर इस फुलवारी में टहलने जाता।

फुलवारी में एक निकुंज था। उसमें फूलों की सेज तैयार थी। एक दिन महराज निकुंज में आया। बन्दर भी उसके साथ था। उसने अब भी तलवार कन्धे पर रखी थी। महराज ने बन्दर से कहा – "बन्दरराज, मैं थोडी देर यहाँ सोना चाहता हूँ। तू मेरे पास बैठ। कोई भी मुझे तंग करने[4] न आये।" ऐसा कहकर महराज फूलों की सेज पर लेटा और थोडी देर में सो गया। बन्दर उसके पास बैठा रहा। कुंज के बाहर सिपाही खडे थे।

इतने में एक भौंरा गूँजता हुआ आया। वह कुंज में

---

1. देखते ही बनती थी = देखने लायक थी
2. रंग-रंग के = कई वर्ण के
3. महक उठना = सुगन्धित होना
4. तंग करना = उपद्रव करना

इधर उधर मँडराने के बाद महराज के सिर पर बैठ गया। बन्दर ने यह देखा। उसने कडककर कहा— "बदमाश, मेरे महराज को तंग करने आया है? फिर मैं क्यों बैठा हूँ? तुझे नहीं छोड़ूँगा।" ऐसा कहकर उसने तलवार ली और ज़ोर लगाकर भौंरे पर वार किया[1]। भौंरा तो उड़ गया। पर महराज का सिर फूट गया। उसी क्षण उसकी मृत्यु हुई।

सिपाही ने बाहर खड़े होकर सब कुछ देखा। वह बन्दर को रोक न सका। क्यों कि एक पल में सब कुछ हो चुका।

सुननेवालों ने कहा— "बेवकूफ की दोस्ती का यही फल है।"

प्रश्न

1. बन्दर की क्या विशेषता थी?
2. वसन्त में फुलवारी कैसी थी?
3. बन्दर ने महराज का वध क्यों किया?
4. बेवकूफ की दोस्ती का क्या फल है?

---

1. वार करना = काटना

PRINTED AT
THE ALLIANCE PRINTING WORKS,
THYCAUD, TRIVANDRUM.
1957

MOHAN PUBLICATIONS

(HINDI)

Standard VIII

1. Dhanush Yagna
2. Sri Narayana Guru
3. Shatru Tadha Mitra
4. Phool Aur Taare
5. Viphal Prem

Standard IX

1. Radio
2. Gouri Shankar
3. Eesa Maseeh
4. Shamadan
5. Bachom Ka Bharat

Standard X

1. Ek Doure Ki Kahani
2. Kavivar Ravindranath
3. Shakuntala
4. Vyomayan Kikatha
5. Sadik

Standard XI

1. Veluthampi
2. Shivaji
3. Sanskriti Ka Ithihas
4. Nala Chritham
5. Do Kahaniyam

APPLY TO

K. PRABHAKARAN NAIR

KAVUVILA HOUSE

JEGATHY, TRIVANDRUM-1.

Cover Printed at Jayaram Press, Trivandrum.